नारीवादी आंदोलनः ऐतिहासिक पृष्ठभूमि व विकास वैश्विक संदर्भ में

सारांशः *समकालीन विश्व में नारीवाद एक सशक्त विचारधारा के रूप में विकसित हुआ। सही अर्थों में नारीवाद केवल एक विचारधारा नहीं है वरन् यह क्रांति हैं, चेतना है, विश्वास है तथा आस्था है। यह उन सभी व्यवस्थाओं के विरुद्ध प्रहार है जो पुरूषों की संकीर्ण मानसिकता की देन हैं। यह एक तरफ पुरुष प्रधान समाज के विरुद्ध शंखनाद है वहीं दूसरी तरफ नारी उद्धार के लिए रचनात्मक प्रयास है। प्रस्तुत शोध पत्र में नारीवादी आंदोलन की पृष्ठभूमि और विकास का वैश्विक संदर्भ में विश्लेषण किया गया है। इस विश्लेषण के माध्यम से यह जानने का प्रयास किया गया है कि नारीवादी आंदोलन के माध्यम से महिलाएं स्वयं का सशक्तिकरण करने में कहाँ तक सफल हुई है।*

कूटशब्दः नारीवाद, समाज, संस्कृति, पितृसत्तात्मकता, सशक्तिकरण, उत्तर संरचनावादी, उत्तर आधुनिकतावादी ।

प्रस्तावनाः

नारीवाद एक समाजशास्त्रीय और वैश्विक अवधारणा है,जो जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में पुरुषों के बराबर स्त्रियों के अधिकारो के समर्थन से उत्पन्न हुए सामाजिक आंदोलन को इंगित करती है। किसी भी मानव समाज की महिलाओं के बिना कल्पना नहीं की जा सकती है फिर भी प्रत्येक समाज और संस्कृति में कुछ ऐसे कारक या मान्यताएं रही है जिन्होंने नारी की सामाजिक स्थिति को न केवल कमजोर किया हैं बल्कि उनके मानव अधिकारों या प्राकृतिक अधिकारों से उन्हें वंचित कर दिया गया। विश्व की इन्हीं शोषणकारी प्रवृत्तियों ने एक नवीन विचारधारा को जन्म दिया जिसे वर्तमान में नारीवाद के रूप में जाना जाता है। नारीवादी आंदोलनों का नेतृत्व प्रमुख रूप से महिलाओं द्वारा ही किया गया। एक आंदोलन के रूप में नारीवाद का उदय 1970 के दशक से माना जा सकता हैं परंतु स्त्री-पुरुष की सापेक्ष स्थिति का प्रश्न चिरकाल से उठता रहा है। प्राचीन यूनानी दार्शनिक प्लेटों ने यद्यपि संरक्षक वर्ग के अंतर्गत स्त्री-पुरुष को समान माना किंतु उन्हीं के शिष्य अरस्तू ने पुरूषों की तुलना में स्त्रियों की हीनता पर बल देते हुए उन्हें दासो के समान माना।

आधुनिक काल में नारीवाद पर पहली रचना *"ए विंडीकेशन आफ द राइट्स आफ वूमन"(1792)* थी। जिसकी रचना मैरी वॉलस्टोनक्राफ्ट द्वारा की गई। इस पुस्तक में स्त्रियों को कानूनी, राजनीतिक और

शैक्षिक क्षेत्रों में समानता प्रदान करने के लिए शानदार पैरवी की गई। वॉलस्टोनक्राफ्ट ने विशेष रूप से स्त्री-पुरुष के लिए पृथक् -पृथक सद्गुणों की प्रचलित धारणाओं का खंडन करते हुए सामाजिक जीवन में स्त्री-पुरुष की एक जैसी स्थिति व भूमिका की मांग की।

नारीवादी आंदोलन के निम्न प्रमुख प्रतिपादक या विचारक हैं- शीला रोबोथम, शुलामिथ फायरस्टोन, जर्मेन गियेंक, कैट मिलेट, साइमन द बिवेयर और मैरी वॉलस्टोनक्राफ्ट, बेटी फ्रीडन थे। नारीवादी विचारक विश्व के विभिन्न देशों, प्रजातियों, समाजो, समुदायों का प्रतिनिधित्व करती हैं और नारी शोषण के विरुद्ध अपनी आवाज बुलंद कर नारी के साथ किए जाने वाले भेदभाव, उत्पीड़न और शोषण को मिटाने का आह्वान करती है। इन वैचारिक आंदोलनों से वर्तमान समय में नारी जीवन को बेहतर बनाने में मदद मिल सकती है।

नारीवादः

जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में पुरुषों के बराबर स्त्रियों के अधिकारों के समर्थन को नारीवाद का नाम दिया गया है। इसकी व्याख्या दो रूपों में की जा सकती है। एक राजनीतिक विचारधारा के संकुचित अर्थ में, यह महिलाओं का समानता के लिए किया गया एक सामाजिक-राजनीतिक आंदोलन है जो लिंगवादी सिद्धांत अर्थात् पुरुष प्रभुत्व और सामाजिक-राजनीतिक शोषण की प्रथा की समाप्ति पर बल देता है। विस्तृत अर्थों में, नारीवाद कई भिन्न किंतु अंतर्संबंधित संकल्पनाओं का एक पुंज है जिसका प्रयोग लिंग की सामाजिक,राजनीतिक व आर्थिक यथार्थता तथा लैंगिक असमानता की उत्पत्ति, प्रभाव व परिणामों के अध्ययन, विश्लेषण एवं विवेचन में किया जाता है।

नारीवादी आंदोलनः

नारीवादी आंदोलन एक जटिल परिघटना है, जिसकी कोई एक व्याख्या या परिभाषा रेखांकित नहीं की जा सकती है। नारीवादी आंदोलन के केंद्र में है- नारी और उससे जुड़े विविध मुद्दे जो समय-समय पर विविध विचारों या सिद्धांतो के रूप में सामने आते रहे और इसी आधार पर नारीवाद के कई रुप भी प्रकट हुए। जैसे- उदारवादी नारीवाद,मार्क्सवादी या समाजवादी नारीवाद, रेडिकल नारीवाद, सांस्कृतिक नारीवाद, पर्यावरणीय 'नारीवाद' आदि। जब नारीवाद की चर्चा की जाती है तो ये सभी विचार उसमें समाहित होते है इसलिए नारीवादी आंदोलन भी कभी-कभी एक विचार या कभी एकाधिक विचारों पर केंद्रित रहते है।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि:

यदि हम ऐतिहासिक रुप से नारीवादी मुद्दों की बात करे तो इनकी मांग है कि स्त्रियों के अधिकारों को मानवाधिकारों की सामान्य श्रेणी के रुप में मान्यता दी जाए और संपूर्ण सामाजिक जीवन के संदर्भ में स्त्री-पुरुष की समानता स्वीकार की जाए। नारीवादी आंदोलन नारीवाद के सैद्धांतिक पक्षों का व्यवहारिक प्रस्तुतीकरण है। प्राचीन या मध्यकाल में स्त्रियों की हीनतम स्थिति के विरुद्ध महिलाओं द्वारा किसी आंदोलन का स्पष्ट संकेत नहीं मिलता है।

एक राजनीतिक अवधारणा के रूप में नारीवाद 20वीं शताब्दी की देन है। महिला आंदोलन और उससे जुड़ा स्त्री मुक्ति का प्रश्न भी एक आधुनिक परिघटना है। संगठित नारीवादी आंदोलन की शुरुआत फ्रांसीसी क्रांति के दौरान हुई जब स्त्रियों द्वारा समस्त राजनीतिक एवं सार्वजनिक कार्यवाहियों में खुलकर हिस्सा लिया गया। इसके परिणामस्वरूप स्त्रियों की कानूनी स्थिति में कई महत्वपूर्ण बदलाव लाए गए जैसे-1791 के कानून द्वारा स्त्री शिक्षा का प्रावधान, 1792 में स्त्रियों को नागरिक अधिकार प्रदान किए गए तथा 1794 के कानून द्वारा तलाक की प्रक्रिया को सरलीकृत किया गया। अमेरिका में 1840 के दशक में एक लोकप्रिय 'सेनेका फॉल्स कन्वेशन' हुआ जिससे अमेरिका की स्त्रियों के अधिकारों के आंदोलन की शुरूआत मानी जाती है। इसी प्रकार 1869 में स्त्रियों को वोट देने के अधिकार के एक राष्ट्रीय एसोसिएशन की स्थापना हुई। ऐसे संगठन धीरे-धीरे यूरोप में भी बनने लगे। सभी विकसित देशों से यह मांग उठने लगी कि स्त्रियों को वोट का अधिकार मिलना चाहिए। इसमे पहली सफलता 1893 में न्यूजीलैंड में मिली। अमेरिका में 1920 मे स्त्रियों को मतदान का अवसर मिला। 1970 के दशक में नारीवाद ने अपने आप को एक विचारधारा के रूप में स्थापित करने का प्रयास किया और 1990 के दशक में यह पूर्ण रूप से एक विचारधारा के रूप में स्थापित हुई। नारीवाद के विचार को 'न्यूयॉर्क रेड स्टॉकिंग्स घोषणा पत्र, 1969' के द्वारा सशक्त अभिव्यक्ति मिली। इसमें उल्लेखित किया गया है कि "स्त्रियां एक उत्पीड़ित वर्ग है, स्त्रियों का उत्पीड़न सर्वव्यापक है जो स्त्रियों के जीवन के प्रत्येक पक्ष को प्रभावित करता है।" 21वीं शताब्दी के आरंभ में इस विचारधारा में कई प्रभावशाली परिवर्तन हुए। आज नारीवादी एक बहुआयामी और प्रभावकारी विचारधारा है जिसने न सिर्फ अकादमिक जगत के बल्कि व्यावहारिक रूप से सामाजिक परिवर्तन का भी कार्य किया है। समय के साथ-साथ नारीवाद के भी कई प्रकार हो गए और नारीवादी कई खेमों

में बंट गए। नारीवादी आंदोलन को प्राय: तीन लहरों में विभाजित किया जा सकता है। नारीवादी आंदोलन की प्रथम लहर 19वीं सदी के आरंभ में, प्राय:1920 ई.तक मानी गयी है। 1960 के दशक में दूसरी लहर को अपना शिखर मिला। बीसवीं सदी के आठवें दशक के बाद (1980-90) से नारीवादी आंदोलन की तीसरी लहर की शुरुआत हुई।

नारीवादी आंदोलन की प्रथम लहर(1850-1920):

इस लहर के तहत स्त्रियों ने निजी और सार्वजनिक दायरों में पितृसत्ता के वर्चस्व को चुनौती दी। उन्होंने वोट के अधिकार,समान वेतन और समान शिक्षा एवं संपत्ति पर कानूनी अधिकार प्राप्त करने के लिए संघर्ष किया। प्रथम लहर के नारीवाद को बढ़ावा औद्योगिकरण से हुए विस्तृत सामाजिक और आर्थिक परिवर्तनों से मिला। 19वीं सदी में नारीवादी आंदोलन ने स्त्रियों को समान मताधिकार दिलाने में सफलता तो प्राप्त की, लेकिन यह सफलता एक लंबे राजनैतिक संघर्ष के बाद ही प्राप्त हो सकी। संयुक्त राज्य अमेरिका की संसद ने 1919 में स्त्रियों को मताधिकार देने के लिए संविधान में संशोधन किया। ब्रिटेन में स्त्रियों को मताधिकार 1927 में मिला लेकिन फ्रांस की स्त्रियों को मताधिकार के लिए 1944 तक इंतजार करना पड़ा।अमेरिका में जब सन् 1920 में महिलाओं को वोट देने का अधिकार पहली बार प्राप्त हुआ यानि कि महिलाएं भी नागरिक बनी तो वह नारीवाद की पहली लहर थी और उसके बाद वह चार दशकों तक हाशिए पर रहा।

नारीवादी आंदोलन की सही मायने में शुरुआत फ्रेंच लेखिका, 'साइमन द बिवेयर' की महत्वपूर्ण पुस्तक '*द सेकंड सेक्स*' *(1919)* से होती है। इसका हिंदी अनुवाद प्रभा खेतान ने 'स्त्री उपेक्षिता' शीर्षक से किया है। इस पुस्तक ने स्त्री मुक्ति की चेतना को एक विश्वव्यापी आंदोलन के रूप में उभार दिया। कालांतर में इसी आंदोलन ने सामाजिक क्षेत्र में तथा सौंदर्यशास्त्र के क्षेत्र में भी एक महत्वपूर्ण क्रांति का सूत्रपात किया। साइमन द बिवेयर नए महिला आंदोलन की बहुचर्चित नारीवादी समर्थक बनी। उनका प्रभाव उनके अपने देश फ्रांस तक ही सीमित नहीं था। उनकी पुस्तक केवल पश्चिमी देशों में ही नहींं बल्कि सारे विश्व में पढ़ी गई। 'द सेकंड सेक्स' ने दर्शनशास्त्र, इतिहास, मनोविज्ञान और मानवशास्त्र का सहारा लेते हुए यह स्थापित किया कि स्त्रियों का दमन इतिहास और संस्कृति की उपज है और इसे एक प्राकृतिक प्रक्रिया नहीं समझा जा सकता। उनका कहना था कि "औरत पैदा

नहीं होती, बल्कि बना दी जाती है।" इससे स्त्री-पुरुष बराबरी व अन्य सामाजिक समानताओं के लिए प्रतिबद्ध समाजवादी जनकल्याण राज्य को विस्तृत तथा समृद्ध बनाने का अवसर मिला।

नारीवादी आंदोलन की द्वितीय लहर (1963-1980):

नारीवाद की द्वितीय लहर साठ के दशक में उभरी।स्त्रियों की आजादी की दृष्टि से साठ के दशक के महत्व को कम नहीं आंका जा सकता है क्योंकि 20वीं सदी को महिला जागरण का युग कहा जाता है। महिलाओं के संगठित आंदोलन हर दिशा में हो रहे थे, अपने नागरिक अधिकारों के लिए वे लड़ रही थी। समाज और परिवार में नारी की सुरक्षित स्थिति के लिए तथा महिला कर्मचारियों की सुरक्षा के लिए कानून पास करवाए जा रहे थे। 1950 और 1960 के दशकों में स्त्रियों के व्यवसायिक एवं शैक्षिक विकल्पों का दायरा भी धीरे-धीरे बढ़ रहा था। यद्यपि इसके साथ ही काम के क्षेत्र में स्त्रियों के प्रति भेदभावपूर्ण बर्ताव भी बढ़ रहे थे क्योंकि यह पहले से ही मान लिया गया था कि स्त्रियां काम के क्षेत्र में गंभीर हो ही नहीं सकती है। ऐसा लगता था कि समाज अतीत के आरंभ से पूर्व प्रचलित सामाजिक मूल्यों को दोबारा अपना रहा है। पुरुष प्रधान समाज के इस सामन्तशाही रवैये से ऐसा लगने लगा था कि नारी आंदोलन के प्रथम चरण की उपलब्धियां भी इतिहास के पन्नों से मिटा दी गई हो। ऐसे समय में 1963 में प्रकाशित 'बेटी फ्रीडन' की पुस्तक *'दि फेमिनिन मिस्टीक'* ने पुरुषवादी विचारधारा को झकझोरा। फ्रीडन ने अपनी इस पुस्तक में स्त्रियों की घर परिवार, बच्चों के लालन-पालन, मातृत्व और पत्नी की भूमिका को स्पष्ट किया। हीगल ने स्त्री को परिवार, प्रजनन और मातृत्व के साथ जोड़कर एक संकुचित दायरें में बांध दिया था। इन्होने प्राइवेट स्फियर और पब्लिक स्फियर का अलग-अलग निर्धारण करते हुए प्राइवेट स्फियर लाँघ कर पब्लिक स्फियर मे जा सकने की क्षमता ही स्त्री से छीन ली थी। हीगल के द्वारा प्रतिपादित पब्लिक और प्राइवेट वुमेन जैसे सिद्धांत के विपक्ष में जेम्स स्टर्बा ने पब्लिक और प्राइवेट दोनों जगह स्त्री-पुरुष के सह-अस्तित्व पर बल दिया। जिससे हीगल द्वारा प्रतिपादित प्राइवेट वुमन की छवि को ठेस पहुँची।

कैथरीन एन. रोजेज की पुस्तक *'सेक्सुअल पॉलिटिक्स' (1971)* ने यह अतंदृष्टि प्रदान की कि किस प्रकार पितृसत्ता में लिंग प्रभुत्व द्वारा साहित्य, संस्कृति, कला, चिंतन और जीवन मे लिंग भेद,लिंग राजनीति को बढ़ावा दिया गया। इसी प्रकार 'केट मिलेट' की सर्वोपरि उपलब्धि यह है कि उन्होंने ने पहली बार 'बिवेयर' से प्रेरणा लेकर नारीवादी आंदोलन को सिद्धांतबद्ध तथा शास्त्रबद्ध किया।

उन्होंने नारीवादी आंदोलन को एक अनुशासन के रूप में विकसित किया। इन पुस्तकों के प्रकाश में आने से पितृसत्तात्मक समाज में जबरदस्त चिंता की लहर दौड़ पड़ी।

द्वितीय लहर के नारीवाद ने स्त्री को एक शोषित और यौनिक गुलाम के रुप में देखा। पुरुष आंदोलनकारियों ने स्त्री आंदोलनकारियों द्वारा स्त्री से संबंधित मुद्दो को अधिक मांग देने का समर्थन नहीं किया और कई बार उनके विचारों का खुलेआम उपहास बनाया। कुछ ऐसे प्रश्न उठाए गए कि "क्या पितृसत्ता सिर्फ एक जैविक धारणा है जैसे कि पुरुष के बगैर स्त्री प्रजनन नहीं कर सकती।" कुछ समाजशास्त्री पितृसत्ता को परिवार तक सीमित रखते थे,कुछ इसे समाज तक फैलाते थे। इस तरह के नकारात्मक अनुभवों ने स्त्रियों को एक अलग स्वायत्त आंदोलन की परिकल्पना तैयार करने को प्रोत्साहित किया। जो सिर्फ रित्रयों द्वारा संचालित हो, उन्हीं की मुक्ति, संघर्ष के लिए पूर्णतया समर्पित हो। जिसमें पुरुष वर्चस्व लिंगवाद, पितृसत्ता और स्त्रियों के दमन जैसे मुद्दों पर गहनता से विचार किया जाए।

नारीवादी आंदोलन की तीसरी लहर (1990 का दशक):

नारीवादी आंदोलन की तीसरी लहर का आरंभ नब्बे के दशक से माना जाता है। इस लहर पर उत्तरसंरचनावादी और उत्तरआधुनिकतावादी चिंतन का गहरा असर पड़ा। नारीवाद की तृतीय लहर को आरंभ करने का श्रेय 'बेटी रेबेका वाकर'और 'शैनन लिस" को दिया जाता है। नारीवाद की प्रथम एवं द्वितीय लहर के विचार तृतीय लहर की स्त्रियों को स्वतः ही प्राप्त हुए।

तृतीय लहर के नारीवाद ने समग्र नारीवाद की जगह स्थानीयता और नारीवाद के विभिन्न प्रकारों पर बल देना शुरू किया। नारीवादियों को लगा कि स्त्री-उत्पीड़न के पारंपरिक रूप अभी भी विभिन्न समाजों में मौजूद है।इस लहर में जातीय, नस्ली और जातिगत संदर्भों में देखे जाने की पैरवी की गई। पश्चिमी नारीवादी आंदोलन के लिए 1990 तक का दशक सबसे महत्वपूर्ण रहा हा। 'नोआमी वुल्फ' की 1993 में प्रकाशित कृति *'फायर विद फायर'*को तीसरी लहर के नारीवादियों के समक्ष बहुत विरोध का सामना करना पड़ा। लेकिन 'नोआमी वुल्फ' को अपनी कृति *'द ब्यूटी मिथ'*के लिए विशेष रुप से जाना जाता है। "नोआमी वुल्फ का मानना है

कि, "ब्यूटी मिथ एक नया नियंत्रण है। घर से बाहर निकली स्त्री "ब्यूटी मिथ" में फंस जाती है। यह एक सामाजिक नियंत्रण है, जो उन स्त्रियों को बांधता है जो परिवार के बंधन से बाहर जाना चाहती है, सौंदर्य का यह मिथ स्त्री के खिलाफ और पूंजीवाद उद्योग को टिकाऊ और आकर्षक बनाता है।" नारीवाद की तीसरी लहर प्रतिभाशाली भारतीय प्रतिनिधि 'शर्मिला रेगे' की रचना *'अगेंस्ट द मेडनेस आफ मनु: बी.आर.अम्बेडकर्स राइटिंग आन ब्राह्मिकल पैट्रियार्की'* ने नारीवादी हलकों में जाति के प्रश्न पर होने वाली बहस को गहराई से प्रभावित किया। इससे नारीवादी आंदोलन में जाति के प्रश्न को भी तृतीय लहर का अंग माना गया।तृतीय लहर के लेखक अधिकतर सूक्ष्म राजनीति पर ध्यान केंद्रित करते हैं और उनकी रचनाओं में लैंगिक अभिव्यक्तियों तथा प्रतिनिधित्व के वे स्वरुप दिखाई देते है जो द्वितीय लहर के लेखकों की अपेक्षा प्रत्यक्षत: कम राजनीतिक है।
कई विद्वानों का मानना है कि नारीवाद की केवल ये तीन लहरें मौजूद है जबकि अन्य का कहना हैं कि तीसरी लहर ने 2010 के दशक मे चौथी लहर को जन्म दिया।

नारीवादी आंदोलन की चौथी लहर:

काफी समय से नारीवाद की चौथी लहर की
आशंका जताई जा रही है और कुछ विद्वानों का मानना है कि यह आ चुकी है। चौथी लहर के नारीवाद के केन्द्रीय मुद्दे शारीरिक स्वायत्तता के सम्मान के आसपास केंद्रित है। उदाहरण के लिए, नारीवाद की चौथी लहर को सेक्स-पॉजिटिव और बॉडी-पॉजिटिव माना जाता है। चौथी लहर नारीवाद नवीनतम नारीवादी आंदोलन है और विद्वान "#Metoo" आंदोलन को इसके मूल बिंदु के रूप में इंगित करते हैं। #Metoo आंदोलन की शुरुआत 2006 में एक्टिविस्ट तराना बर्क द्वारा की गई थी, हालांकि 2012-2017 की कई घटनाओं के बाद इसने और अधिक ध्यान आकर्षित किया, जिसने यौन उत्पीड़न और यौन हमले की ओर ध्यान आकर्षित किया। नारीवाद की चौथी लहर के केन्द्र बिंदुओं में शरीर की सकारात्मकता, ट्रांस समावेशिता, यौन उत्पीड़न और यौन उत्पीड़न के प्रति जागरूकता और प्रतिरोध और तृतीय लहर से अंतर्संबंध पर निरंतर ध्यान शामिल है।

निष्कर्ष:

नारीवादी आंदोलन नारीवाद की विचारधारा पर केंद्रित एक सतत् आंदोलन है, जो लैंगिक समानता और पितृसत्ता के खिलाफ वकालत करता है। नारीवादी आंदोलन केवल बौद्धिक जगत तक ही सीमित न रहकर विभिन्न देशों के गलियारों से निकलकर नारीवादियों के मन में स्पंदित हो रहे है। नारीवाद की पहली लहर 1848 में सेनेका फॉल्स सम्मेलन के साथ शुरु हुई,जहाँ महिलाओं ने समाज में महिलाओं पर चर्चा की। द्वितीय लहर जिसे महिला-मुक्ति आंदोलन भी कहा जाता है, अन्य मुद्दों के अलावा वित्तीय और प्रजनन संबंधी चिताओं पर केंन्द्रित थी। विद्वान नारीवाद की तीसरी लहर और नारीवाद की चौथी लहर के बीच की रेखा पर बहस करते है और क्या चौथी लहर भी मौजूद है या तीसरी लहर की निरंतरता है? नारीवाद की चौथी लहर यकीनन 2006 मे तराना बर्क द्वारा #Metoo आंदोलन की स्थापना के साथ शुरु हुई। इसने यौन उत्पीड़न की व्यापकता की ओर ध्यान आकर्षित किया। नारीवादियों का उद्देश्य स्त्रियों को पुरुष के समान बनाना नही है, अपितु प्राकृतिक विभेद को स्वीकार करते हुए उनकी सामर्थ्य का सम्पूर्ण उपभोग करने तथा समाज के द्वारा प्रस्थापित कृत्रिम असमानताओं को दूर करने का प्रयास है। नारीवादी विचारक नारी के उस परिवेश एवं वातावरण को बदलने की चाह रखते हैं जिनके कारण उनके व्यक्तित्व का विकास नहीं हो पाया। आज संपूर्ण विश्व में सभी राष्ट्रों मे चाहे वह विकसित राष्ट्र हो या फिर विकासशील, अफ्रीकी या एशियाई राष्ट्र विश्व की नारियां अपने अधिकार, न्याय , नैतिकता, सांस्कृतिक मूल्यों को बचाने और पितृसत्ता जैसी जंजीरों से मुक्ति प्राप्त करने की कोशिश में सलंग्न है।

संदर्भ ग्रंथः

1. **गाबा,ओमप्रकाश, "*राजनीतिक विचारक विश्वकोष",* मयूर पेपरबैक्स, नोएडा, 2014**
2. **शर्मा, सुभाष," *भारतीय महिलाओं की दशा",* आधार प्रकाशन,पंचकूला, 2006**
3. **आर्य साधना, निवेदिता मेनन, जिनी लोकनीता, *"नारीवादी राजनीति संघर्ष एवं मुद्दे",* हिंदी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय, दिल्ली,2001**
4. **व्होरा,आशारानी, *"भारतीय नारी दशा-दिशा",* नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली,1983**
5. **जैन,अरविन्द, *"स्त्री मुक्ति का सपना",* वाणी प्रकाशन,नई दिल्ली, 2004**
6. **दुबे, अभय कुमार, *"समाज विज्ञान विश्वकोष",*राजकमल प्रकाशन,नई दिल्ली, 2013**
7. **कस्तवार,रेखा, *"स्त्री चिंतन की चुनौतियां",*राजकमल प्रकाशन,नई दिल्ली, 2013**

8. **कुमार, डॉ. राजीव, "*नारीवादः राजनीतिक अवधारणा*",शोध मंथन, मेरठ, 2017**
9. **जादौन, वासुदेव सिंह, "*नारीवादी सिद्धांतों का विकास एवं समकालीन समाज में नारी जीवन*", काव पब्लिकेशंस, दिल्ली, 2017**
10. **एनसाइक्लोपीडिया आफ फेमिनिज्म, 1986**